'तेरा वर्ष'

परिवर्तन सप्ताह

16-06-13

1.स्वमान – मैं मरजीवा ब्राह्मण हूँ।

- यह मेरा अलौकिक ब्राह्मण जन्म है...पवित्रता और दिव्यता मेरे इस अलौकिक जन्म के श्रृंगार हैं...मुझमें लौकिकता नहीं, अलौकिकता की झलक है...मेरे चाल, चलन, चेहरे में दिव्य गुणों की खुश्बू है..।

2.योगाभ्यस –

अ. अलौकिक जन्म – मैंने पुराना शरीर छोड़ दिया...पुराने शरीर के साथ ही मेरी पुरानी स्मृतियाँ, पुराना जीवन समाप्त हो गया...अब मैंने भगवान के घर जन्म लिया है...सूक्ष्मवतन मेरा घर है...ब्रह्मा मेरी माँ और परमात्मा शिव मेरे पिता हैं...यह मेरा दिव्य जन्म है...मैं वैसा ही हूँ, जैसे मेरे माता-पिता हैं...मेरे स्वभाव-संस्कार में मेरे माता-पिता की झलक है...मेरा सोचना, बोलना, कार्य करना सब उन्हीं के समान है...अब मैं ऊपर ही रहता हूँ क्योंकि वही मेरा घर है...मैं फरिश्ते रुप में नीचे आता हूँ, दिव्य कर्त्तव्य करता हूँ और वापस ऊपर वतन में चला जाता हूँ...।

ब. रुहानी ड्रिल – इस अलौकिक ब्राह्मण जन्म में प्यारे बापदादा ने हमें अनेक स्मृतियों व स्वमानों से सजाया है...हम अपने इन दिव्य स्मृतियों व स्वमानों के साथ खेलें...कभी किसी स्वमान से अपना श्रृंगार करें तो कभी किसी से...सारा दिन यह अलौकिक खेल वा ड्रिल करते रहें...।

3. धारणा – **बाबा ही मेरा संसार है**

- जब बाबा ही संसार है तो अपने संसार में ही रहें...अपने संसार में ही अर्थात् बाबा के साथ ही खायें, खेलें, नाचे, गायें, सोयें, जागें, उठें, बैठें, हर बात, हर कर्म सिर्फ उसके साथ और सिर्फ उसके लिए...।

- ``जब बाबा ही मेरा संसार है, दूसरा कोई संसार है ही नहीं, संसार नहीं है लेकिन संस्कार कैसे पैदा हो जाता? अब बापदादा समय प्रमाण `संस्कार` शब्द को मिटाने चाहते हैं। मिट सकता है? इसकी भी एक डेट फिक्स करो। अच्छा सबकी इकट्ठी नहीं हो तो पहले एक-एक अपने लिए तो डेट फिक्स कर सकते हैं ना? कर सकते हैं? जो डेट फिक्स की ना, वह बापदादा को लिखके देना।`` – **शिवभगवानुवाच**

4. स्वचिंतन – **मेरे परिवर्तन की डेट ?**

- मैंने अपने स्वपरिवर्तन वा सम्पूर्ण परिवर्तन की क्या कोई डेट फिक्स की है?
- अगले सीजन में मैं बापदादा के सामने ऐसा क्या स्वपरिवर्तन करके जाऊँ जो बाबा मेरे परिवर्तन को देखकर खुशी से उछल पडें और मुझे अपने गले से लगा लें?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! प्यारे बापदादा ने कहा है – ``प्यार में तो सब पास हैं लेकिन अभी समय के प्रमाण स्व परिवर्तन, उसकी भी आवश्यकता है। स्व परिवर्तन में विशेष संस्कार परिवर्तन, स्वभाव परिवर्तन, उसकी आवश्यकता है। तो दुबारा जब मधुबन में आयेंगे, बाप से मिलेंगे तो जो कुछ पुरुषार्थ में समझो कि यह नहीं होना चाहिए, वह परिवर्तन करके आना। करेंगे?``